

लाक्ष्यां ॥ सट्का ॥ लघुवर्षं लिख्य विद्याषट्पिण्डकनी ॥ ११ ॥ वरुषविलिखत्येव यं वा षट्पिण्डकनी ॥ रु
लखन्या स्वर्ग्या वा ॥ लिख्यद्वा विद्यामन ॥ १२ ॥ पूजार्थं रुमिदं पूज पूजनात्सर्वसिद्धिर्द ॥ पूजाविधिं यवका
जं दूर्वा निर्मली वसु कामली ॥ ११ ॥ संयत्तु कालयत्सम्यक् मनुना जनयुक्त ॥ मनुना जनयुक्त ॥ पूर्व नि ४
सर्व ४ मुख्यं न कीर्त्तिमादय ४ ॥ १३ ॥ रुतयत् पिण्डाद्या ४ कृत्वा ४ श्वत्रत्ररुवना ४ पूजनात्सर्वसिद्धिर्द ॥ पूजाविधिं यवका
सर्वं रुपाग्निं वसु निर्मली ॥ १४ ॥ तनयुजाय कर्त्तव्या पूर्ववत्सम्यक् ४ संभादुर्न वदनी ४ दूर्वा ला
नाना र्त्त रुतकर्मणि ॥ १५ ॥ निर्वाक कसुमं दव यं गवाथ कमानक ॥ पूर्ववत्सम्यक् ४ संभादुर्न वदनी ४ दूर्वा ला
निवरा मर्त्त ॥ १६ ॥ विषतिं दूकपुष्पा ४ पूर्ववत्सम्यक् ४ संभादुर्न वदनी ४ दूर्वा ला
थका विद ४ ॥ १७ ॥ पला ४ कसुमो ४ पूर्ववत्सम्यक् ४ संभादुर्न वदनी ४ दूर्वा ला
रुवत् ॥ १८ ॥ तुलसी मंजरी लिख्य पूर्ववत्सम्यक् ४ संभादुर्न वदनी ४ दूर्वा ला

॥ ६ ॥ मादनाम् ॥ रूपं प्रवर्तमानं लब्धं पादच्छायापनर्गमनम् ॥ ८ ॥ अङ्गनस्य लब्धं वा पादच्छायापनस्यैव
पूजाविधिं प्रवक्ष्यामि मन्त्रिगुह्यं संपादनीम् ॥ १० ॥ मूलमन्त्रं लब्धं संपूज्य इयं वाग्देव्या ॥ ११ ॥ शुद्धपदं
चित्रं संपूर्वं निष्क्रियत्पूर्वमादनाम् ॥ १२ ॥ एवं कृतं स हर्षं पृथग्यच्च दिनदिनम् ॥ मधुलाद्याध्यायः
मादनात् प्राप्तिं विवस्य वचनं यथा ॥ १४ ॥ अथ यन्पूर्ववर्तिनी इयं वाग्देव्या ॥ १५ ॥ मङ्गलद्वयं कृ
त्वा तं दृष्ट्वा लब्धं त्रयं धृत्वा ॥ १६ ॥ विहीतकां शर्वं पृथग्यं मादनात् सोमवासनाम् ॥ पूजयत्पूर्ववत्पुनः
तं कृतं मङ्गलं ॥ १८ ॥ धूम्रं कृत्वा समं चैव पूर्ववत्पुनः कृतं ॥ उच्चाटनीं कृतं सत्यं नान्यथाः
॥ १९ ॥ सप्तमं कृतं सप्तमं चैव पूर्ववत्पुनः कृतं ॥ पूजयत्पुनः कृतं ॥ २० ॥ सप्तमं कृतं सप्तमं चैव पूर्ववत्पुनः कृतं
॥ २१ ॥ पूर्ववत्पुनः कृतं ॥ २२ ॥ कृतं कृतं सप्तमं चैव ॥ २३ ॥ पितीलकं कृतं सप्तमं चैव ॥ २४ ॥ पुनः कृतं
॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

[illegible]

॥ वाष्पस्य निष्कापूष्य निष्कर्षलरुतधुर्वी ॥ कतकीकसुमनावा तद्व्याजायतधु
॥ निष्ठापिष्टिगमर्षायायनर्तुयं यथुथागमदिकथनं नामनवमः पटलः
कोष्ठकदुदवावा ॥ अष्टमूर्त्तुर्महामूर्त्तु नमस्तुवन्द्य ॥ गवत्र ॥ वदपथागमनुस्य
लाचननविलपयत् ॥ ३ ॥ वाष्पयुतेजयधीमान् निख्यपूजासमन्वितं ॥ नाश्च सिद्धिरुव
नमस्तुवन्द्य ॥ ३ ॥ मलुलेद्यथागान् भागद्वयगहादयः ॥ तत्कल्पनासमायाति तम
लेद्यथा ॥ वशीकर्तुर्महामहं दुष्टसंगहमवव ॥ रुवद्यवनसैदहा नाशकायाविः
पदिन ॥ २ ॥ महामूर्त्तुनमाप्राति कल्पकीवाक्यममुवा ॥ मलुलान्नगत्रंगमं ब्रह्मसम्माहमवव ॥ १० ॥
॥ कल्पाद्यमलुलेद्यथा ॥ पटलसुदिनदिन ॥ विद्वत्सर्गकवर्त्तुणीयं शिवस्यववर्नयथा ॥ १२ ॥ अतिर्तिद
यागान् नगर्नयाममवव ॥ ब्रह्मवात्राजगहवाणीयमच्चाटनं रुवत् ॥ १४ ॥ यथाग्निपतसर्गवः

मियते ३

पतांगमनसमंसमी॥ अर्कविक्रमयंकीर्तं खन्मनेवडमदयत॥ १७॥ शिकाललपनंकुयार्त्तं नितयता
विवात्रल॥ अथवा निवतलन गदहत्वाडुमानर्ल॥ १८॥ निलनेलनसंयुक्तं मद्ययद्वनमादनाहायन
त्रलंवरुवनिर्त्यं नायकायाविवात्रल॥ १९॥ वडकीर्तं शिकालं ड पूर्ववतलपनषूत्रा तापद्वनस्यमि
कलं वात्रागेत्रागे॥ २०॥ धूक्तवडवसंयुक्तं मद्ययत्समंयितथा। उपलपनवित्युग गुल्मनागीरुवदिप
शिकाललपनंकुयार्त्तं षट्सहसंमनंउयत॥ नकथद्वदशहन मानर्लवनसंघाय॥ २१॥ नद्ययद्व
पाशपिदाहन मलुलाहृणमात्रलं॥ २२॥ मयेत्तपनंकुत्वा गुल्मनागीरुवदिप॥ २३॥ गतं कंग
कन ऊंयाततारुवतधुवं॥ महनस्यचनकन उन्मादीजायतनिप॥ २४॥ ॥ नितिधीव वृथा म
। रुजर्लसंरुनार्थं गेदाजिह्वावविशती॥ २५॥ ॥ कोशरुदनडवाया नमस्तमोतिमंसवृत्तं पन्न
व उपवात्रेमुषाठ॥ २६॥ तद्यंजापनिर्मतय नर्पलस्यविधिं॥ २७॥ ॥ उदकसंयुक्तं कयं नमस्तमो

[illegible]

संक्षिप्तपत्रक ॥ वक्ष्यंते ममाहनेनैव सुवर्णपत्रकं ध्यायत ॥ ३ ॥ गतिगर्ह्यं वाक्कांति गाय ॥ ४ ॥
नायुतं तपनं सदा विद्वत्पत्रकं ॥ ५ ॥ वक्ष्यंते ममाहनेनैव सुवर्णपत्रकं ध्यायत ॥ ६ ॥
वने वदु मिष्टि ॥ १० ॥ निष्पद्यते तपसा साक्षाद्विप्रनाशनं ॥ दया विप्रकृते दया मिष्टिं मानवीर्य
तं जित ॥ १२ ॥ पूजानंदमयं यद्येवमगं विनिश्चयति ॥ वन्दनं सुवर्णपत्रकं नायुतं मिष्टिं दत्त ॥ १३ ॥
॥ १४ ॥ कवचमदृष्टं धीमान् ज्ञायते नाहं संज्ञाय ॥ माध्वी दधनं मिष्टिं पूजितं शुद्धवा निष्ठा ॥ १५ ॥ न
॥ १६ ॥ मकुलमयं तपसा येनैव येनैव गायति ॥ श्रान्तलालनं संपर्कं दत्तं ४ पत्रकं तं मयि ॥ दत्तं दारुण
नृजायतमं मया श्रुतं ननं संपर्कं ४ कदलीरुलं वा ॥ मकीर्णं हार्कं वा संपर्कं ॥ १७ ॥ पलायकं वप
पादं नान्यथा विवक्ष्यते ॥ क्वाग्नकं नममिष्टिं दत्तं तं नतपत्रकं ॥ २१ ॥ मृदुलं वप
मादां ज्ञायतं निष्ठा ॥ कान्तं नममिष्टिं तपसां शुद्धवा निष्ठा ॥ २३ ॥ ज्ञानिषु सुवर्णपत्रकं सर्वेषां नि

कर्मकामध्यायनिदाय संरुनंवरुवधुवा ॥ १ ॥ निर्वार्कपुनकुडयो मिथितं चक्रमात्रक ॥ यं
नरुनं चक्रमात्रमात्रमात्रमात्र ॥ २ ॥ यतान्नपतकसंय पतवासंयपुनक ॥ समंसमंगवंगुश्री
पतमात्रकं रुवत ॥ १ ॥ कपूत्रमिथितं तायं पंचाष्टाद्वानमात्रमात्र ॥ निर्यं चतययदीमान् मासमर्कम
रुवत ॥ १३ ॥ कस्तूरीमिथितं तायं बाष्पसाकारुवत धुव ॥ पौष्टि तर्पणं तेषु अयुर्न विविधमंशया
मात्र ॥ १४ ॥ नत्तायुर्न तर्पणं लक्ष्मीवर्जायत धुव ॥ १५ ॥ मन्त्री ननेवमपुन वृषिना सिद्धिमाप्नुयात् ॥
रुविदारुक्तप्येन म्नीलमाकर्षणं रुवत ॥ १६ ॥ सुमंतकसुभाषित मिथितं जलतर्पणं ॥ १७ ॥ पूजवा
पुष्कं च पथ्यकं मिथितं जलतर्पणं मन्त्रसिद्धिर्जनानां सिद्धि रूक्तिवेनाग्यमवत ॥ १८ ॥ उमस्मान्नीवा
नपुष्कं विपुसं हानमकल ॥ १९ ॥ जलनमिथितं पूज ॥ २० ॥ लिलितं विद्धिरावर्त ॥ २१ ॥ वद्यायुर्न तर्पणं न उ
सर्वेषां निन्दकारुवत ॥ २२ ॥ डलूकनकसंमिथं तर्पणं वा निष्पत ॥ २३ ॥ वलनमियतं नपु नयुतद

यथांगतः। श्वाननकनसंमिष्टं वात्रिभक्त्यर्पितम् ॥ २५ ॥ श्वाननवक्तृत्वात्तद्वत् सिधुननासंमिष्टम् ॥
४। डहीनाः। श्वानिर्नमिष्टं नाथनतर्पितम् ॥ २६ ॥ माभननदुर्मन्त्रेण मृकलुसदुःखपित्रा। ऊप नैश्वर्यम् ॥
॥ तिष्ठीषद्विद्यागमं। श्वानननतर्पितम् ॥ २७ ॥ कादह। ४। पटल ॥ ११ ॥ ॥ काश्चरुदनडवाच ॥ कील्लगमनम् ॥
वाच ॥ मन्त्राद्वानपवक्त्राणि संरुमाहत्माभवत् ॥ पूनश्चयापिथागीव वक्त्रं दंतनपूजक ॥ १२ ॥ वक्त्राभ
पदमूत्राय ॥ डहन्वपवाद्यम् ॥ गयतीवगलानाम्नी सर्वसिद्धिपदाह्वि ॥ १३ ॥ वक्त्राभसिद्धिदं
॥ कि ४। कील्लकं वक्त्रविद् ॥ वक्त्रं लंकं पूनश्चया तद्वत् ॥ १४ ॥ तद्वत् ॥ १५ ॥ दार्ढ्यं वावडाद
यतीवगलादया ॥ तानादिपुत्रयन्मर्तं भाकार्थीवक्त्रमात्रक ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥
वर्क ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥
वालादिपुत्रयन्मर्तं कन्याकांक्षिणमाप्नुयात् ॥ वानादीवीरमभ्यर्कं गयतील्लकापनाह ॥ १२ ॥

[illegible]

प्रसदृशधीमान् जायतनाहर्षयशतार्कवीजादिमंगव पञ्चयश्चानपूर्वकं ॥ १७ ॥ तानाम् ॥ यथा
शास्त्रस्यथागमद्वयाहति ॥ अथपुनर्मृगवीजादि गमयतीवगलाकृत्या ॥ १८ ॥ तापद्वर्तनमज्ञातार्थं गमय
॥ अग्निवीजादिगमयती पञ्चयद्वगलाकृत्या ॥ १९ ॥ महतामापमंयुक्ता गन्तावन्
त्रभानं वशीरुवत् ॥ मायामायादिगमयती पञ्चयद्वगलाकृत्या ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं सिद्धिं रुचुं क्रिं जित्त्रस्य
द्वितिकलौयुग ॥ पुनश्चनलकाले तु गमयती पञ्चयन्नन ॥ २१ ॥ मूलविद्यादशांशं व मंगलि ॥ इति व
नजायते ॥ अथसंख्यायुक्ताका लक्रमकंक्रमानक ॥ २२ ॥ दिनसंख्यायुक्ताका पक्रमवतसंख्याय
मनी ॥ २३ ॥ ॥ ॐ तिथीषड्विद्यागमसंख्यायनर्तुद्वादश ॥ २४ ॥ ॥ निरुपपादं हृदि व
दिरुवयामि ॥ ॥ कोशरुदनडवावा ॥ धीकृष्णीमहादव गार्हतीवन्नरुषग ॥ २५ ॥ ॥ ॐ ॥
विमर्षीवगलाद्वी सर्वसिद्धिपदायिनी ॥ २६ ॥ वहुर्जुं द्विजुं वा गदां जिह्वां च विजुमी ॥ पीतवल्गु

॥ १३ ॥ रुतयतपिष्ठाया
 ॥ १४ ॥ महतातापसंपूर्काः
 ॥ २० ॥ नाडावात्राडपूजावा म
 ॥ २२ ॥ गभयनीवविनामं नसि
 ॥ २४ ॥ काटिकाटिकयनेव तस्यसिद्धि
 ॥ २५ ॥ मंजोदीवाथमंजोत उपक्षपनपत्र
 ॥ २६ ॥ विन्दमाक्षयसंपूष स्वर्णसिंहासनापनि
 ॥ २७ ॥ श्रीनववर्णमहाचूर्णं श्रुचयन्मूलविद्ययाः शिवाः ॥ २८ ॥ पूजयत्युग वाणी ॥ गोत्रीनमोऽकमो ॥ २९ ॥ तः

दीजनवसंपूष तदावाहनपूर्वकं। यं गामिपंचका। लघु वक्षतस्य जनकमात्र॥३॥ पूर्वका। लघुपूष
तं तन्मंतेनवपूजयत्॥ वक्षथको। लघुपूष अमुनाजंक्रमानक॥१॥ जामवदमस्तीनास्ती तदगो
लाकषट्क्षरं॥ पंचका। ४४वमभतत् पंचामुसम्यगभवत्॥२॥ मूलमनुगतनेय पूजा पंचवक्ष
तपूत्र४मत्री॥ तदपनिसमस्यर्च माहकाष्टकमलदु॥१॥ तदपनिसमस्यर्च विध्वजांस्तकनव
क्षम। कन्यकांवाधवापूष पूजयद्गतीविकां॥१३॥ डरुमायवतीपूजा मक्षमावक्रिम
वंपूजयत्सम्यक् पूत्रश्चनगतविभो॥१५॥ दृष्टंश्चिद्विधंपाकं पूजायाश्चिद्वि। लघुतथा गीतीमा
कालपूजयद्दती त्रिकालवक्षयन्न४॥१॥ तस्यदर्शनमात्रं पंक्तिवगविद्यां वभो। तस्य
ति तदद्वाष्टपवाडनी॥१२॥ वगलामंतेसिद्धस्य हृदयवपविस्थिति॥ पतिवादिह वमंका दृष्ट
संगय४॥२॥ वक्षवात्री गृहीवापि वागपस्त्राथवायति। वगलामनुसिद्धिदु सेवपूज

[illegible]

नकाधनवानाविद्या नमस्तनयसद्वली ॥ पथागर्वेवनरुवत् वगलावर्धनेऽपूना ॥ २४ ॥ ग ॥ ॥ ४ ॥ सर्व
यविधिना साधयद्गतामूर्त्ती ॥ चर्वववगलामर्त्तं मंजनाकमिदं शुभं ॥ २५ ॥ ॥ ॥ गिषादिभ्याम
सुधा ॥ वक्त्रादिरिःपत्रिहतां वगलीरावयद्विदि ॥ १ ॥ ॥ कोऽरुदनडवाच ॥ विनंविदपत्रिः ॥ ४ ॥
सृष्टिस्त्रिनिवसं हानां पूजां वनिविधं केली ॥ कवलसृष्टि नृपाव गर्जकोलागमकमातु ॥ ३ ॥ भूयने ॥ ग
लागमानाम ॥ गेऽदः ॥ भवनादिरिः ॥ कामनृपागमनाम संहात्रकमपूजनं ॥ ४ ॥ नाद्वेवनेवावर्त्तव
ध्यामां सर्वावयव ॥ अरिनी ॥ नद्वारं पृथिनी ॥ वेव पार्थयद्विषकन्यकां ॥ ५ ॥ कृष्णाष्टम्यां वसुधैव
यादिर्यगर्गपथा ॥ हलिकातल्पमानीत्वा स्त्रीयादिं मुखेषूव ॥ ६ ॥ तस्यापत्रिमत्कीय समसंजीवित्रं प
वृद्धिमान् ॥ पर्याकापत्रिक्तन्यां वंदनने विलपितां ॥ १ ॥ ॥ कुवाद्यत्रिनिर्मय ॥ कुर्याद्विद्विनामूर्त्ती ॥ ४ ॥
वत्र ॥ न्यस्यभाराद्वयं वादो वगलायं जवन्यसत् ॥ १३ ॥ कन्यकां वेवन्यसद्वर्त्त नरुदं गनिर्मस्यत्र

[illegible]

यत्। निवदयद्वयद्विं नरेवउपमाचनत्॥१३॥ हतं वाथ सहस्रं वा मनुनाजमिदं सत्। पञ्चम्यत्रल
सिद्धिदं पञ्चं मनुसिद्धिकर्मपत्रं॥१४॥ नमदेवविनायक पथागं नरुवत्कलो॥ नस्मात्सर्वपयत्नन
यक्तावेवगनायसंगय॥१५॥ यक्तायं वदियाहकि॥ सोराग्यमर्चनमाचनत्॥ सखद॥ खममकुत्वा
त्वा य॥ कनायवर्नकुवि॥१६॥ सपतिता रुवत्पसी नोनर्वननर्वकवउत्॥ वाक्कायां नत्रित॥ पुनरुद
यक्तायं ममानस॥१७॥ कयात्सोराग्यमपूजां च नात्ररुष्टोरुवन्नन॥ जितन्त्रि॥ सखद॥ कया
पिंवेव नस्मात्कोच॥ रुदन॥१८॥ यके॥ नायवर्नवेव सविम॥ पतिता रुवत्॥ सपत्नीं दारयत्नीं
स्त्रीं नजर्क कलालगृहकन्याकी॥१९॥ अर्वयद्विधिसा। गि। पूजाद्वयसमं सते॥ सर्वलेक॥ संपन्न
तं पूजनासिद्धिर्गुर्विना॥२०॥ नस्मात्सर्वपयत्नन अर्वयद्विर्वनरुया॥ ॥ नमिध्यादिश्या
। वीदद्वेवगलीदवीं सुरुनामुस्ववृषिणी॥ ॥ कोच॥ रुदनडवाच॥ नाजनाजसविधी॥ नननजना

पञ्चमः प्रथमः। अथ पतिरार्तिवत्सलः॥१३॥ अथ वा पौर्णमास्यां वा सोहाग्यार्चनमाचरेत्॥ पथाग
सर्वपुण्यत्वन पथागमदिवरुतल॥१४॥ सोहाग्यार्चविना पूरु नरुवकूपकाटिहिः। अमानाष्टकैयक्ता
वेममकृत्वा लाकालोक्तयाजयो॥१५॥ गीताधुं समतीकृत्वा सोहाग्यार्चनमाचरेत्। आटादयं वनका
तः पूरु रुदकानया विना॥१६॥ सोहाग्यार्चनककृत्वा नतरीः॥ पमाप्रयात्। संकल्पश्च विकल्पश्च
वैकल्या कथासोहाग्यपूजनं॥१७॥ सूखाक्षयः॥ कथा द्वितीया॥ पमाप्रयात्॥ स्वकादः॥ वि
मिश्रपत्नीं वा युवरायां तैश्च पिवा॥१८॥ अथ यत्तु यथायतीं सखायनमर्तविदुः॥ दीक्षातय
नेकः। संपत्नीं पृथिवीं अथ यत्तु यथायतीं॥१९॥ मर्तं च मर्तनिमर्कं च सद्यः॥ सिद्धिकर्तुं रुवि। सिद्धिमार्गमि
धीः॥ सिद्धिः॥ मर्तं सखायनमर्तं च ददः॥२०॥ पटलः॥१४॥ ॥ पीतवर्णमदाद्यूर्णं दृष्टपीनपथाध्वनीं
॥२१॥ अथ वा विनिर्गतं। वक्ता सुविद्यां वदमं संरुनाखी सपावनात्॥ ॥२२॥ अथ वा च॥ अथ

सुंदरगलानाम्नी त्रलसंरुनकात्रिणी। डल्कामरुवीद्विनीयांच संरुनरुवनरुथ ॥३॥ कालाम्नी श्रीरुती
भार्नी संरुननामसंयशवहहानमरुवीयेव पंचमंडकमात्रक ॥४॥ षट्पंचकाटिवाभूअ कालिकादि
प्रितथ ॥ वश्रुदंतभ्यापसंरुनं संरुनरुनरुयुयुका ॥५॥ तान्रं वरुनिलिखत्युव सुव्रमायांरु ॥६॥ वरु
कारं दीर्घसंयुक्तं विंदुनारुप्रितंरुथ ॥७॥ हलं हलं हलं नत ॥ एववांचा मखपदं वदत ॥ संरुयद्वि
गयात्राय गकिवानारुमूत्रंरु ॥८॥ वानादं वगलावीरुं तान्रवमाभुसंयुतं त्रलसंरुननामं व द
वर्तं लिखुं दसं ॥९॥ पंचास्यदवतामंरु त्रलसंरुनरुयुयुका ॥ न्यासविद्यांचकलंरु पूर्वकिमनुनाउ
जान्तितां ॥१०॥ मूद्रजिह्वां धनयंतीं मूत्रमालीं निवीरुअ ॥ नर्वध्वात्वाअधनंरु मूर्कलंरु सुवद्विमा
वर्तंरुथ ॥११॥ निवीरुअयतसध्या मृत ॥ गघापलायत ॥ पथागंरुसमरुयुव मंडसंस्कारमात्रंरु ॥१२॥
थ ॥१३॥ मंशुद्वानं पवश्रामि गत्रजन्मासमासत ॥ तान्रं वरुनिलिखत्युव सुव्रमायांच गकिवानारुमूत्रंरु ॥१४॥ व

श्रीरुतीमस्तु संरुनं विषयवत् ॥ यातवदमस्वीयेव बहुधा संक्रमानक ॥ ४ ॥ वक्राविष्णुमह
 कांति कादिहर्तृदत्ता ॥ सपादकाटि विपुना संरुना संवडरुमं ॥ ३ ॥ पंवाभा दानमडुलं तरुयाकवि
 त् ॥ २ ॥ दानादं किं दानादं वगलामस्विधाद्वनत् ॥ ८ ॥ जीजीजी चरता वायं सर्वदृष्ट पदेवदत्ता त
 त् ॥ संरुयदितयं पाका लं जीजी वतावदत् ॥ १० ॥ जिह्वा कीलया वायं ॥ ११ ॥ वृद्धि विना
 नुनालं व दृष्टं रुडु विपुडकं ॥ १२ ॥ पंवाभा दुरुनं पं व वीजवदं सपावनं ॥ मस्वित्रवा स्य मनुस्य दं
 किं मनुनाउवत् ॥ १४ ॥ ध्यानं यत्नात्यवक्रामि वगलामस्विदवता पीतां वना धर्मादवी द्विसहस्रं
 र्कं सवृद्धिमान् ॥ १३ ॥ तालकं नरुनं लं वाक्कलान् रुजयलत् ॥ गङ्गास्वनथ सामं त काटिकाटि
 नमावत् ॥ १८ ॥ संस्कात्रल विनामं स साधकस्य पमादकत् ॥ लाकालाका संरुनं व नाभा धाल्कामस्वीत
 वत् ॥ २० ॥ वगलामस्वी पदे वाक्का पूर्ववीजयं वदत् ॥ वक्रिजाया समायुक्ता लामयामनूर्मनं ॥ २१ ॥

पीवाणदृष्टवेवाय वीजवद्धसपावनं॥मषिष्ठाथानिवात्राहं द्वेदाकूरुयमवच॥२२॥उल्कामुखीदवत
वात्राहं न्यासपूर्ववदावनत॥ध्यानयत्नास्यवक्रामि मन्त्ररुदकमानक॥२४॥पल्लयानलसंकाश
नं मनलकं कमानक॥पर्यवर्त्तनंरुत्वा स्वविद्यां प्रपकाशयत॥२५॥तालकनद्रनस्युह लक्ष्मण
वर्तनं गमात्मकी।कमानकप्रवक्तव्यं नमोवाग्निप्रकर्तुवि॥२६॥उर्विचद्विधं प्रवेष्टुं नमोवाग्निप्रकर्तुवि
कली॥सागक्त्याशपातस्य पुनर्गच्छंतिनात॥३०॥किंनस्यत्रिधयूकानि माहात्म्ये च दर्शय
चदशपटल॥१३॥ ॥वैध्वककसमाधौवृद्धिनाशनस्यनी।वेददेवगालीदेवी ह
मुविस्तारं वदमकनूलाकन॥२॥ ॥ॐ॥प्रउवाच॥तार्त्रयस्त्वमायां प्रपाशदं वत
पीवकमन्त्राय वाचामुखपदं वदत॥४॥संरुयद्यमन्त्राय पीववीजानिना
॥ॐ॥वक्ष्यामि मनुनायक॥३॥ककानानाग्निप्रदमु पीकिचुंदमदाहर्त॥आहवद

कामेश्वरीदवताय अगस्त्यरुनकात्रिणी। वीर्यशुभावा वीर्य शक्तिः स्वाहा समन्वितं ॥२३॥ कीलकी शक्ति
मलसंकाश वीनावाहनमस्मिता। वीनाधयमहादवी सूरुनाथरुजामयदं ॥२४॥ चर्वध्वात्वा जपम
पुनः लक्ष्मभक्तं उपासीत ॥ मनुसिद्धिरुवत्युज्ज्वलाक्षकीर्तिवानुरुवतु ॥२५॥ तस्यास्त्या जगत्सर्वस्वा
तयैव यत्पावकः ॥ कुर्यावर्तुत सर्व माध्वयकत्रमादनात् ॥२६॥ नदीनदश्च नतिमा नानादादयसं
॥ काजपन्मरुमतद्धि कोशरुदनकाविदः ॥३१॥ ॥ तिष्ठी सविद्या गमसंख्यायनतं श्रुपं
मिदं नृणां ॥१॥ ॥ कोशरुदन उवाच ॥ नमस्तु गिरिजानाथ मंगविद्याममपरा ॥ अधुना या
गदंथाका सर्वदृष्टपदं वदतु ॥ लकोनदीर्घसंयुक्तं विन्दुनाहृषिर्गता ॥ वीर्य
वर्दीजानिवाचनम् ॥३॥ ज्ञातवदमूखीमंग अगदं ध्वयकानके ॥ अर्कपंचवच
नेना ॥ ॥ ॐ वीर्यदीपे शक्तिं च हं कीलकमूदाहृतं ॥ पूर्ववन्मासविद्यां ध्वध्वानं व

क्रामिपूजका॥८॥ जातवदमुखीमंजु धवतायालवृषिणी॥ रुजदं संरु नार्थं सैंरिनीविद्वन्मृ॥ १०॥
गंधर्वविषयकाश्च गन्धुआत्रगपन्नगाना॥ वतालजकिनीमह्य॥ साकिनीवदनांरुसान्॥ ११॥ मिंदो
नयसुखमायाव वक्रितीर्जयपंचकी॥ स्यसूत्रद्वितयंवेव वीर्जयेवरुथादहा॥ १२॥ कालामरुणीयद
लंथाक्ता वायामुखपदं वदत॥ संरुयंद्वितयंथाक्ता पूनवीर्जयथादहा॥ १३॥ जिह्वाकीलेमृ॥
युक्ती कालामुखा मयंमनू॥ १४॥ तातुनरुवद्विं वीर्जवदामनस्ययी॥ १५॥ मधिष्ठमविषयाह॥ मय
संपूर्ववदावेनत॥ १६॥ आनंविनारुवन्मुक्ता सिद्धमंजुपिपूजका॥ १७॥ कलत्यंयगटामुक्ता कालानलस
कंसुव द्विमान्॥ तर्पणगवाक्रीनिसालकनकनसदा॥ १८॥ तर्पणंयवदुर्लक्षं लक्ष्मकीनसदा॥ सुरुमि
ग्राध्वयार्दमहामंजु ननालं दुर्लक्षं रुवि॥ १९॥ दानीमसुनांजु वदहानुमखादयं॥ मायासंरुन
ल्लयवन्त्यु जा लक्ष्मवत॥ २०॥ ॥ २१॥ ॥ २२॥ ॥ २३॥ ॥ २४॥ ॥ २५॥ ॥ २६॥ ॥ २७॥ ॥ २८॥ ॥ २९॥ ॥ ३०॥ ॥ ३१॥ ॥ ३२॥ ॥ ३३॥ ॥ ३४॥ ॥ ३५॥ ॥ ३६॥ ॥ ३७॥ ॥ ३८॥ ॥ ३९॥ ॥ ४०॥ ॥ ४१॥ ॥ ४२॥ ॥ ४३॥ ॥ ४४॥ ॥ ४५॥ ॥ ४६॥ ॥ ४७॥ ॥ ४८॥ ॥ ४९॥ ॥ ५०॥ ॥ ५१॥ ॥ ५२॥ ॥ ५३॥ ॥ ५४॥ ॥ ५५॥ ॥ ५६॥ ॥ ५७॥ ॥ ५८॥ ॥ ५९॥ ॥ ६०॥ ॥ ६१॥ ॥ ६२॥ ॥ ६३॥ ॥ ६४॥ ॥ ६५॥ ॥ ६६॥ ॥ ६७॥ ॥ ६८॥ ॥ ६९॥ ॥ ७०॥ ॥ ७१॥ ॥ ७२॥ ॥ ७३॥ ॥ ७४॥ ॥ ७५॥ ॥ ७६॥ ॥ ७७॥ ॥ ७८॥ ॥ ७९॥ ॥ ८०॥ ॥ ८१॥ ॥ ८२॥ ॥ ८३॥ ॥ ८४॥ ॥ ८५॥ ॥ ८६॥ ॥ ८७॥ ॥ ८८॥ ॥ ८९॥ ॥ ९०॥ ॥ ९१॥ ॥ ९२॥ ॥ ९३॥ ॥ ९४॥ ॥ ९५॥ ॥ ९६॥ ॥ ९७॥ ॥ ९८॥ ॥ ९९॥ ॥ १००॥

॥ १० ॥ सर्वं आत्मा जपमंडं त्रिंशत्संस्कारं । वर्मघृतवसनाहृत्वा विनित्यार्थं पदं कर्तुं ॥ १० ॥
 ॥ ११ ॥ अमिंदां वगली वेन सिद्धीं नयां पृथक् । अधुना संरुपयत्तु सत्यं कनकाचलं ॥ ११ ॥ ता
 तात्तामसी पदं ॥ वदही ऊरुया दण । सर्वं गद्यतनाच्चाय दृष्टानां पदमूत्रं ॥ १४ ॥ वीरुं रुया द
 कीलं रुया दण पुनर्वीरुं रुया दण ॥ वृद्धिं विनालययुगं पुनर्वीरुं रुया दण ॥ १३ ॥ वक्रिजाया समा
 ॥ १४ ॥ अथ कंद उच्यते । कात्तामसी दवता व संरुनां निमूर्तिरि ॥ १४ ॥ अर्नयत्तात्यवश्चामिना
 कात्तामसी सप्तपुं । विनयार्थं संरिनीदवी रुजहं विधिपूर्वकं ॥ २० ॥ ॥ १५ ॥ सर्वं आत्मा जपमंडं अर्कल
 सदा । सद्यः सितयं वेव वाक्कलान् रुजयत्तु ॥ २२ ॥ निमूर्ति संरुयमंडी पंचरत्नानि प्रकृतं ॥
 माया संरुनवादी व आश्चर्यं वकलौय ॥ २४ ॥ तानं वदच्चाय वततः परं ॥
 दण ॥ सर्वं गद्यतनाच्चाय दृष्टानां पदमूत्रं ॥ २३ ॥ वावा मखपदं वाक्का संरुयदयमूत्रं ॥ आ

येवीरुमनोसंख्या उद्धृत्यननायवत् ॥ २० ॥ जिह्वा कीलयाचार्य पूर्ववद्दीउमद्वनत् ॥ वक्रिजाया
रुनार्थव वृहद्भानुमुखीमथा ॥ १२ ॥ वीरुववगलावीरु हाकिम्याकमानका कीलवैपलवैव वि
क्रामि मनुकदनपूरका ॥ ३१ ॥ कालानलनिरुंधवी इटपीनपयाधनी काटिवाकसमायुक्ता वेनि
हानुमुखीरुवत् ॥ ३३ ॥ अवध्यात्वाङ्गलरु मूलैलरुक्रमानका मपयलुदशांरु गुडादकसमन्वित
मानका ॥ ३५ ॥ मनीरुवयकलवी मोरुग्यभवनमादना मोरुग्यभवातिनायु मनुसिद्धिर्न ॥ ३६ ॥
यात् ॥ ३८ ॥ ॥ नृतिपीमद्विद्यागमभांख्यायनमंरुधांरु ॥ ४० ॥ ॥ जिह्वागमादायक
उरुनामि ॥ ॥ कोरुददवाव ॥ वन्दुवूठनमभु नृदिनायमिपूजित ॥ ४१ ॥ नाकवीम
पथार्गवापसंरुन वक्रुतवपूरका ॥ ३॥ सुवमायाववावीरु मायाभववपूरका ॥ ४२ ॥
वाक्का धाववृपीपदवदत् ॥ ३॥ जिह्वा कीलयमचार्य मरुक्कुरुमीवत् ॥ ४३ ॥

॥ वक्रिजाया समायुक्तं वृद्धज्ञानमस्वीमनू॥ २८॥ सविता च कविख्याता गायत्रीर्कद्वयवचः। दवतासं
कृपणवैश्वेन विनियोगमस्तु॥ ३०॥ पूर्ववन्मासविद्यां च सर्वस्ववदवन्तः। आनेयत्नात्यव
मायुक्तां वेत्रिजिह्वा समन्वितां॥ ३२॥ संरुनानेदमर्थादिर्वां दृष्टीनयथाधर्मी। मदिनामदसंयुक्तां वृद्ध
कसमन्वितां॥ ३४॥ तालकनकनल्युप दृष्टां संस्कृतानिना। वाक्कलान्तराजयत्यश्वात् न दृष्टां संस्क
देन विनियोगे॥ ३६॥ नकलं वीपयागस्य गपथादिकदा चन॥ यश्चकनानिपुणार्गव दवतासंमापमात्र
गमादायकभक्तवर्ती वाभननपुनपनिपीठयतीं। गदाहिद्याननवदक्रियान पीमीवनाद्याद्विदु
मिमांसां ललायाश्चमदद॥ ३८॥ ॥ ॐ ॥ अत्र उवाच॥ मंशुद्धानेपवक्रामि पूनश्चयाविधिरुथा।
मिमांसां ललायाश्चमदद॥ ३९॥ मुखिमूत्रवन्तः॥ स्त्रुनद्वयं तथावाक्का सर्ववर्धनतावनन्तः॥ विकटं गीपदं
मन्त्रं न दृष्टं न॥ ४०॥ विनामयपदं वाक्का सर्वज्ञापयीतिव। पाह्नीनागयमश्वायुडमा

दाकत्रयमर्क॥१॥सभापहात्रिणीथाक्ता सुवमायांसमूचनहू।किन्नामाह्वीजव लक्ष्मीजमन॥
मन्त्रित॥२॥गताकरीमहामर्क वगलानामयावनं।वक्तामसिध्वंदाइत्यगभयनीसमूदाहता॥१०॥
॥१॥पूर्वाकांन्यासविद्यां वगलार्पणंनयसहू।न्यासानूककमलोव ऊपादापंवनवच॥१२॥पीतां
वेविजिह्वांरुदनाथं दूत्रिकांविश्वतीतिवां।पानपागगदायां क्षत्रयंतीतिवारु॥१४॥नर्वक्ष्मात्वा
पकसन्निधं जलनवकुमानक॥पूजायुतं वसंतप्यं श्रुत्यंनानलनव॥१५॥हिमवर्कपायसन ऊ
सहस्रंरत्नसंक्रया॥नानाधरुजभागांश्च कर्त्तुमगदसंरुवान्॥१६॥पचकींश्चपथागांश्च जिलव
व सर्मंतकुसुमनवा॥षट्सहस्रंरुनयुक्तं सुशिलवाथकुलुक॥१७॥वहीकनकासंभाटं कीर्त्तिप
तागोकतानिष्ठा।संरुनंवरुवेत्यु नारुकायाविद्योवत्॥१८॥श्रुक्श्चपिचर्मदेव्यं समिधं४संयु
यभववाइनद्यानसमायुक्ता सद्याविद्वषर्गंरुवत्॥१९॥विशीनकस्यसमिधं गृह्णामुनिषहस

॥ कर्मनाशं नृपतया ॥ ॥ कर्मनाशं नृपतया ॥ ॥ कर्मनाशं नृपतया ॥ ॥ कर्मनाशं नृपतया ॥
 मृदाहता ॥ १० ॥ ददता वगलानाम्नी कुगर्त्मरुनकात्रिणी ॥ ह्रीं वीर्जं किं विद्यते वाग्वेदीलकीतथा
 वा ॥ १२ ॥ पीतांबरधारी सोम्या पीतरुषलरुमिर्गा स्वर्णसिंहासनस्था मूलकल्पतत्रात्र ॥ १३ ॥
 ॥ १४ ॥ सर्वभूतार्थपूज्यं कर्मलक्ष्मीं पावनं तपयिष्युमिच्छन् वात्रिणवाधपूजक ॥ १५ ॥ जातिर्व
 कीपायसन मृथवापायसाध्या ॥ वनवासवाहनयुग्म पर्यायरुलदायक ॥ १६ ॥ सप्तपदनकनक
 मंथ्र लिलवामुसमरुवान् ॥ सध्यानासनमायांति मंथ्रममनसाधक ॥ १७ ॥ लाल्युगकुचुताकी
 तटी कीर्तिपुङ्गवतुधुर्वी मालकनकनयुग्म सहस्रवसुसंक्रया ॥ १८ ॥ कालुष्येवरुणकान नर
 समिधः संपुष्टननः पथकं तिसहस्रपादः समिधः कम ॥ १९ ॥ मंथ्रवसुवसुचाय समिधः
 मुनिमहसुर् ॥ षट्कोलकालुष्युक्त्यान् निगम्यां कृष्णपङ्क ॥ २० ॥ स्वावर्ग्यगिनिर्निषेव नदीपा

५०१) २०११५ न त ०००

[illegible]

श्रीकृष्णमंत्रः ॥ शृङ्गोद्वेगं वीक्ष्य मानसं रुचति धूर्तं ॥ २० ॥ षट्कर्मनिर्माणमिदं सुसिद्धं ज्ञाताकृत्वा
 २८ ॥ ॥ अतिथीष्विद्यागमसंख्यायनतं च सकृदहं पठत् ॥ १० ॥ ॥ नमस्कृत्य गतां दवीं जि
 त्वा ॥ सम्यक् कृतं नमो दत्तं नित्यानि नित्यं रूपकं वंद्यं नमस्कृत्य पथार्गं वदमपरा ॥ २॥ षट्सं
 कृत्वा नमस्कृत्यात्पूज्यं तापहृत्तनहर्त्रं परं । कृतं कृतं कृतं कृतं कृतं कृतं कृतं कृतं ॥ ४ ॥ विमर्शकं
 मिथं वदन्ममिह ॥ कर्त्तुं पुण्यं ममिह ॥ शृङ्गोद्वेगं वीक्ष्य मानसं रुचति धूर्तं ॥ ३ ॥ मर्मपिलव
 तं कृतं पूज्यं कर्त्तुं मम मन्त्रितं । पीताम्बुकादि सर्वोद्योगात्तन्नाशयत धूर्तं ॥ ८ ॥ अतिथीष्विद्यागम
 मंत्रं पठन्मम सुदृढिमान् । गुरुं कुरु कुरु कुरु कुरु कुरु कुरु कुरु कुरु कुरु ॥ १० ॥ कनकीदलहामनग
 म् ॥ ११ ॥ अतिथीष्विद्यागममंत्रं पठन्मम सुदृढिमान् । गुरुं कुरु कुरु कुरु कुरु कुरु कुरु कुरु कुरु कुरु ॥ १२ ॥ षट्सं
 कृतं पूज्यं कर्त्तुं मम मन्त्रितं । पीताम्बुकादि सर्वोद्योगात्तन्नाशयत धूर्तं ॥ १४ ॥ अतिथीष्विद्यागममंत्रं पठन्मम सुदृढिमान् । गुरुं कुरु कुरु कुरु कुरु कुरु कुरु कुरु कुरु कुरु ॥ १५ ॥

॥ मधुकंठागमीसंव विमलसुंदरनल्लुत ॥ १५ ॥ रुक्ताजायतनीर्षु ग्रामादिपतिवत् ॥ १६ ॥ दधन
दधनशुद्धयात् षट्सहस्रं कर्मल ॥ १७ ॥ कनसर्पादित्रागंथ सधानागनमाश्रयात् लोकीदधन
ननशून्यहामन कृत्वा कन्यपतिरुवत् ॥ १८ ॥ दूतनकांतिमान् रुक्ता राजीनामात्मशुद्धयत् की
यत् ॥ १९ ॥ मधुकंठागमीसंव विमलसुंदरनल्लुत ॥ २० ॥ वालीमाधनशुद्धयात् लोकां कर्मल
॥ २१ ॥ उन्नतलनशुद्धयात् वाचा कर्मलमाश्रयात् ॥ २२ ॥ कर्मरुक्तेलहामन पूर्ववद्धाममाश्रयत् कल
॥ २३ ॥ कर्मरुक्तेलहामन पूर्ववद्धाममाश्रयत् ॥ २४ ॥ पवननाथानहामन अग्निमक्षदियुः सूर्य ॥ २५ ॥
दियुः निवपकुडवोलेव वातभागी रुक्तेलदियुः ॥ २६ ॥ माहिनी प्रयुक्तदावे ॥ २७ ॥ अस्मान्नागी रुक्तेलदियुः ॥ २८ ॥
शुद्धयात् षट्सहस्रं कर्मल ॥ २९ ॥ नाडीवलसमायुक्ता ॥ ३० ॥ अस्मान्नामि यमत्रियुः ॥ ३१ ॥ गव
स्त्राद्वलं वजायते त्रिपुण्याग्निमाश्रयत् ॥ ३२ ॥ यस्मिन्नाहनसंदहा निवस्य वचनं यथा ॥ ३३ ॥ निलतेलन

॥ लोकादयानशुक्रयात् सहस्रवातसंख्याया ॥ १३ ॥ वदमूत्रादिभागं धृत्वा नाग्यं नित्यं संशयः ॥ माध्वी
तु लोकीदयानशुक्रयात् निष्पन्नसदसुतः ॥ १४ ॥ सगर्हगुहलीभागं सध्यानागनमाप्नुयात् ॥ अ
शुक्रयात् कीर्तनसहस्रमिनाग्य दक्षिणापननागनी ॥ २० ॥ पंचगव्यानशुक्रयात् पूर्ववत्संशयनागः
विज्ञेयः ॥ कुर्तननेतुदयानसामाकर्षणं रुवत् ॥ २२ ॥ तिलनेलनशुक्रयात्सर्वकर्षणमाप्नुया
माशुक्रः ॥ कुलजाश्वेवहामन रुवदाकर्षणं सतः ॥ २४ ॥ कर्मकुलनेलहामन रुवद्विघ्नाननकः ॥
देयुः सूर्यः ॥ प्रागीवजायतमासात् निवस्यवचनं यथा ॥ २५ ॥ शुक्रयादावनालनं येषां प्रागीरुवः
रुवद्विघ्नः ॥ अर्कपुत्रदवालोव रुयप्रागीरुवद्विघ्नः ॥ २६ ॥ वजाकीर्तनसंयुक्तं वेदोनालनं पुत्रकः
तत्रिघ्नः ॥ गवंचतिलनेलं व आदनालनं नव ॥ ३० ॥ अभवानगत्रवोधवालाध्वानपूर्वकः ॥
॥ तिलनेलनसंयुक्तं योवनालनं नव ॥ ३२ ॥ शुक्रयात्पूर्ववत्संशयः ॥ मनुलादिनसंशयः ॥

[illegible]

॥ ३४ ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८ ॥ ॥ बहुकुंजी जिन
वाच ॥ नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं ॥ यथा गीता परमं वदमसर्वमंगला ॥ २ ॥
स ते विनामसं लिखेत् ॥ ३ ॥ एका कर्त्री वगली देवी वष्टयस्ममा भदनाता गता कर्त्री वसं वष्ट
मानीय स्कायय दुरुकोटन ॥ ४ ॥ वृक्षमूल जयं नमो मयूतं ध्यानपूर्वकी प्रह्वनादि संयुक्ता
॥ ५ ॥ तिरुक्कतमास्तु ॥ ६ ॥ जिह्वा संरुन वक्तु ॥ ७ ॥ प्रह्वमा ॥ ८ ॥ वृक्षमूल जयं नमो मयूतं ध्यानपूर्वकी प्रह्वनादि संयुक्ता
॥ ९ ॥ जिह्वा संरुन वक्तु ॥ १० ॥ प्रह्वमा ॥ ११ ॥ वृक्षमूल जयं नमो मयूतं ध्यानपूर्वकी प्रह्वनादि संयुक्ता
॥ १२ ॥ जिह्वा संरुन वक्तु ॥ १३ ॥ प्रह्वमा ॥ १४ ॥ वृक्षमूल जयं नमो मयूतं ध्यानपूर्वकी प्रह्वनादि संयुक्ता
॥ १५ ॥ जिह्वा संरुन वक्तु ॥ १६ ॥ प्रह्वमा ॥ १७ ॥ वृक्षमूल जयं नमो मयूतं ध्यानपूर्वकी प्रह्वनादि संयुक्ता
॥ १८ ॥ जिह्वा संरुन वक्तु ॥ १९ ॥ प्रह्वमा ॥ २० ॥ वृक्षमूल जयं नमो मयूतं ध्यानपूर्वकी प्रह्वनादि संयुक्ता

॥ अक्षतानय ॥ १७ ॥ समं समं निपुच्छिष्टं मर्दयत्कल्पयत्पुनः ॥ बहुन गुलपुरुलीव कश्चिन्म
लिखद्विदं च निदं हतं ॥ पतवक्रा पतकाश्च पतमा संपुनः ॥ १८ ॥ अथ रुजायुनेयुः निपुगच्छि
त्युर्ववदाचनतं ॥ स्थापयच्चक्राक्षराणि यमकीं कथोगत ॥ १९ ॥ तत्रापनिदिवा नरा अग्निं सी
ने ॥ २० ॥ अथादिगता कनी ॥ पाणपनिषी कृत्वा दुर्गं दानकमभा वयत् ॥ २१ ॥ अता कथा कर्कशं नेमु
रुनं नर्गं अता कथा सिद्धिमनूजयत् ॥ अवं कृतं सफे नार्गं सगच्छं मुता रुवत् ॥ २२ ॥ मसुत्रिका
अदमकुलं गीतला विद्यया तथा ॥ सपक्षं द्वित्रयं कीने ॥ सदा हं निति मा प्रयात् ॥ २३ ॥ तिककाया
निवजा ॥ अथ कथाया ददयं तथा ॥ वदनी मूलता गत्वा पाणस्त्वापक्षी वनत् ॥ २४ ॥ अथागुली
अक्षतानम् ॥ कान्त्रुर्कसंख्याया ॥ दक्षिण हिमश्वारुत्वा नापयन्नगं तथा ॥ २५ ॥ पर्वपर्वकत्राया पा
थकी द्वादशी तथा ॥ मीनं पूर्ववर्षमाया वदनी कंटकास्तथा ॥ २६ ॥ पुरुली पतवक्रुल वध्वा पादगर्क

कथा सर्वत्र संयुतं ॥ १० ॥ द्वादशनामवालिखा ललाटवर्गालिखत ॥ १८ ॥ सर्वांगयागिनीवीर्यव
न विपुलकेशमालयं ॥ मुष्कान्नशीतसंयुक्तीकं मर्दयत ॥ धनसर्वपे ॥ २० ॥ बहुत्रपूरुल्यालिख
ता शक्तिं सैकाग्र्यवृद्धिमान् ॥ वगलावीर्यमधुर्ल साधनामवसंलिखत ॥ २२ ॥ वक्ष्ये द्वगलामं
कर्कशं त्रैलोक्यं मुद्दिशीतमालपयत ॥ संतपदीपलिखया पुनरुल्लस्य संतपेत् ॥ २४ ॥ उर्वरुत्वाश्वा
मसूत्रिकाशवाशको पश्चाद्देवमालयं ॥ संतपतन्निवपुः एकमेकं कर्म कर्म ॥ २६ ॥ वंद्यः
निकृताश्वकीशानी तं पिच्छी सादनं गथा ॥ धूसूत्रं कीर्तयन् द्विकानकलाकृतिं ॥ २८ ॥ अट्टलिली
॥ धागुलीगंठमुर्मो ॥ अजिह्वा नासास्यभ्रमो वगला ॥ लोचनं पटद्वयं ॥ ३० ॥ व
कत्रभाग्र्य पोष्येदं देवपुष्पक ॥ कीटकान् सफ संख्याकान् प्रापयत्यादयूमेक ॥ ३२ ॥ उप
पादशगरुक् ॥ अश्वनाम्नोऽपि पादो वलिंदयोश्च कूटं ॥ ३४ ॥ अस्मप्येदं विधायं ग. ना. जी. गूलं रुव

१३

धूर्वा ननेवदुःखदं ४५५ पक्षाह्मक्यमालयं ॥ ३५ ॥ वक्रदं वापसं हारं जीवस्त्रापि त्रिपुंयथा । त्रयोत्राजो
संलिख्याल्यनिःश्रित्यत्पमकाग ॥ ३६ ॥ निःश्रित्यमं रुपुर्वं न केव वा रुत्रान्मरु ४। सालवनेव मं ४।
तं न मां र्थेत्सालवन ४॥ ३७ ॥ तस्मिंश्च मं रुपुर्मात्मा मं रु (लोव) तं हारं ॥ त्रिकालं पाषाणकार्यं म
जाम्थोदययथा ॥ ४१ ॥ रुत्रकृतिमायाति तम ४ सुथोदययथा । न ह्यात्मा वापसं हारं य ४ कनातिन
मात्रक ॥ ४३ ॥ ॥ तिष्ठीषश्चिद्यागम ४ र्थेत्सालवन ४ न केव वा रुत्रान्मरु ४। सालवनेव मं ४।
व ॥ नमस्त्वार्त्ततीनाथ नम ४ पन्नगरुषला पन्नविद्यारुदनं व वगलायाश्च भवद ॥ ॥ ४४ ॥ उवा
उरुत्रलानमादो रु रुत्रमायां तताञ्च न ॥ तिष्ठीषश्चिद्यागम ४ र्थेत्सालवन ४ न केव वा रुत्रान्मरु ४। सालवनेव मं ४।
वीर्जं व वेष्मासुपदमूचन ॥ वृषिनी पदमूचार्थ पन्नविद्यापदं वद ॥ ४५ ॥ गमनीति पदं वा रुत्रान्मरु ४। सालवनेव मं ४।
हानेरु रुत्रद्वयं वद ॥ पूर्ववन्नववीर्जं व वगलासूचन ॥ ४६ ॥ रुत्रमायां तताञ्च न ॥ तिष्ठीषश्चिद्यागम ४ र्थेत्सालवन ४ न केव वा रुत्रान्मरु ४। सालवनेव मं ४।

था। त्रयोत्रयोवर्तिदत्ता आनीत्वासाधकाकम॥३३॥ तर्कंरकाव्योदोकीनलहालयसूत। तल्ललाटं
प्रवेनेवर्मजल मरुयत्कलसादकं॥३८॥ सहस्रधर्मविधिवर्मजवानिधनादिरि४कमात्॥ पथागंपीठि
थलायं मध्याक्रमाऊर्निमथा॥४०॥ हिदिनेवाधवापंय मधिसंख्यादिनसूत्र। उवंकुमपीठिनस्य पी
४कनातिननाधम॥४२॥ मनीवन्नववाअला मरुधनारुविश्रुति। पथागंथापसंहानं मरुधसंवक्त
सर्वविद्यवाअरुद्यां समपीनपयाधना। द्वादिसंहावयद्वी वगलीसर्वमिद्धिदी॥१॥ ॥कुमानडवा
॥३॥ उवाव॥ मंथाद्वानंपवक्रामि मंरुसिद्यदनावधि। पथागंथापसंहानं मरुधसर्वकुमानक॥३॥
॥३॥ लेखनार्कतीर्जव वगलापदमूदन॥ पत्रमथागमूत्राय गस्यमंतन४पत्रं॥३॥ पूर्ववन्नवः
॥३॥ रुकादिनयमूत्रन॥ पूर्ववन्नववीर्जव पत्रपदपदवद॥१॥ हानिलीतिपदथाक्ता प्र
वगलापमूदन॥ ललाहनेमंरुवीज मरुधविहतिमवद॥१०॥ वक्तामपिध्वंदास्य गायत्रीसम
॥३॥ यातिथीवद॥ नृपिलीपदमूत्राय वृद्धिनालयगीवद॥१॥ पंथदियपदथाक्ता २

दाहती। पत्रविद्यारुक्लीव वगलादवतास्वर्य॥११॥ अथ पथागर्वकामि मनुस्य उक्तमानक। पाणीक।
घृष्टार्थविन्यस्य कमादवकलध्वनि॥१३॥ क्षान्तप्रत्नापवक्षामि काश्च रुदनकाविदा मन्त्रमन्त्रमयी
कर्मकस्यपावनी॥१५॥ तपयिदासनेव तद्वर्णकमानक॥ द्वागमीमनरुद्रयात् मन्त्राश्च न सन्निवृत्ति
त्रात्॥१६॥ मन्त्रसिद्धिरुक्लुप्त नाशकायाविद्यानक्षत्रा पत्रपथागजालषु मन्त्रमन्त्रकमानक॥१७॥ तत्र
जायते कथमर्थं गमनपत्रविद्यया॥ अथ तन्मन्त्रमन्त्रं व अतिमन्त्ररुक्लुप्तलरुक्लुप्त॥२०॥ दद्यादिमनिनाय
जपितिरिति मन्त्रमन्त्रकमानक। पत्रविद्यारुक्लुप्तमर्थ मन्त्रवेवायुर्न जपत्॥२२॥ अथ कक्षानसमाधाति
व रुक्लुप्तवनसंज्ञय॥ याद्यादिमानिनायव निदकारुवतिध्वनी॥२४॥ तथादिमनिनायव यववृषा
नीतकर्तृरुक्लुप्त॥ विद्यादिमानिनः सर्वे अथ तन्मन्त्रमन्त्रमावयत्॥२५॥ रुक्लुप्तविद्याविहीनापि मन्त्रव्यावृत्तिध्व
त्॥ अतन्मन्त्रमन्त्रमाह्वयं न जानीति मन्त्रीति॥२६॥ सर्वे यद्वदन्मन्त्रं विप्रश्वात्सुकाणिनी। पागमस्या

मदोपासीकामनीतनितः ॥ किंवीजनविन्यासतः ॥ १२ ॥ तरुद्धागीध्वनीवीजः ॥ सुव्ववीजंनतान्यमन्तः ॥ ल
सर्वमंमयीदवी ॥ सर्वकिषलकात्रिणी ॥ सर्वविद्यारुद्धीव ॥ रुद्धविधिपूर्वकी ॥ सर्वस्वात्ताजपमंरुत
इमंमन्त्रिनी ॥ १३ ॥ स्वगुमामलकपत्र ॥ मयर्तवकमानक ॥ यागिनीवीनयुजांय ॥ आवनेचसमाद
नक ॥ १४ ॥ तज्जायुर्तज्जपंयुक्त ॥ तज्जविद्यंनज्जायत ॥ यज्जकृतापिनिपवः ॥ तज्जः ॥ कूर्वतिनिध्वली ॥ १५ ॥ त
ज्जिमानिनायव ॥ तज्जविद्यारिमानिनः ॥ त्रुपाहिमानिनायव ॥ योवनारिमानिनः ॥ २१ ॥ यज्जकृ
नसमायाति ॥ दंतंभ्यारुवदिपूः ॥ सथायोवनदीनय ॥ तमः ॥ सूर्यादययथा ॥ २३ ॥ त्रुपवान्बलभागी
य ॥ यज्जत्रुपाहिमानिनः ॥ शृंगदीनारिजायत ॥ नाशकायादिवानः ॥ २५ ॥ वेदिकंयपत्रिह्यय ॥ त्रिप
स्वभारुवतिधुर्व ॥ दहारिमानिनायव ॥ नष्टद्वारुवधुर्व ॥ २७ ॥ दोहाग्यसमायुक्ता ॥ सर्वसंभादनैरुव
नी ॥ यागमस्यासीयागलका ॥ तपस्वीवतपस्विनः ॥ मन्त्रसिद्धिः ॥ सिद्धापि ॥ यज्जपतीतिपूजक ॥ पत्रविः

शारुदनेन मीमाणा न तत्पत्र ॥ ३० ॥ यथा गत्वा समानीति न तन्मं जयतं जयत ॥ यागसिद्धामं रसिद्धा तप
शारुदनेन जयत ॥ ३१ ॥ नडाई समाभन श्रीवासवापत्रा रुवत ॥ न तत्समाधिको रुया त्रैवद्वयकत्रा रुवत ॥
नेत्रविंशतिः पटल ॥ २० ॥ ॥ पत्रपक्षपसं हारी पत्रपत्रपक्षदिनी ॥ पत्रविद्या रुक्मीतां वगली द्वादि
लंब पथागं वदली कत्र ॥ २ ॥ ॥ ॐ नडावाव ॥ विश्वभक्त रुक्मिण्यं त्वरुक्मि वगला मयं ॥ न तद्रुक्मि
सार्थं विश्वभक्तं कुमानक ॥ ४ ॥ मनसा वा जयन्मं मयं तस्य विला कयत ॥ रुक्मि विलसन्मं कति
यूक्मि विंशत्यदामनं त्रिपा ॥ ३ ॥ सडरुवपतिः साक्षा हडस्यति न विस्वर्यं ॥ सडरुवपतिः साक्षा नि
पदिवि मनन्यधी ॥ ८ ॥ तिसरुसंभानयूकं तस्य विश्वकुमानक ॥ विस्मृतिश्च रुवतली ही नारुकाय
न मननवृद्धिमान ॥ १० ॥ पदकिं लं रुक्मि कृत्वा दिति को वनदिद्युव ॥ सडरुसंभानयूकं नडरुवपतिः
नक ॥ १२ ॥ तस्या दिति विपिण्यंति इयं त्रैव न न्यति ॥ पण्डिति मियत पूरु म्मासा हा ग्म म्मासा

सुमिद्धा नयस्त्रीरुपजीवनः ॥ ३१ ॥ रुद्राकीर्तारुवन्नाथा निदकापिरुवधुर्वी। ययतर्मीरुत्रार्जव निष्पम
षकभारुवत ॥ ३३ ॥ नेवनिर्दिक्कभारुया यदिक्कतुयच्चजीविनी ॥ ॥ तिष्ठीषद्विद्यागमसंख्यायन
तां वगलीहदिरुवयत ॥ ॥ कुमारडवाव ॥ नमस्तुयागिर्मस्य यागत्राजनभासुत। पत्रविद्याकर्म
यं। नतुरुषमानातां वगलीचकुमानक ॥ ३ ॥ वाद्ययंवेवेवेविर्न विष्णुताकषुवर्तत। नष्टवदनः
विस्मर्तंति स्तुतुस्तुवतिधुर्वी ॥ ५ ॥ पानपार्थवेविजिह्वा गदीष्टूलनसंयुता। पीतवर्णमदा
भारुत्वा निदकावतिधुर्वी ॥ १ ॥ अमुष्टुमयंमंरं आजानातिकुमानक। नतुगत्वामहामंरं उ
दीर्घं नोक्तकायाविद्यानक्ष ॥ २ ॥ अरुतेष्टेयसंयुक्ता द्वाभावरुतयदि। नस्यागदुक्तामेवात्र निष्ठा
दृष्ट्यावुवधुर्वी ॥ १ ॥ पमंवानगर्नवाथ निर्युक्त्वापदक्षिणी। अपदयुतसंख्यात ननुमचकुमा
रमभाष्यात ॥ १३ ॥ रुतिर्नयुष्टिर्नवेव एतावाममाश्रित। नवनोनीनिष्ठाकाल नग्नहत्वाप्त

निष्प्रयश ॥ १४ ॥ पदक्रियं यं कृत्वा पश्यते जपमात्रतः । वृक्षादिमूलमात्राणि शिवस्य वचनं यथा ॥ १५ ॥
॥ १६ ॥ लक्ष्मणश्चामनाश्रयं मृत्तिकां च कृमात्रकः । पद्माक्षोऽपि निनिःक्रियं नद्यापि निस्सूक्ष्ममात्रं ॥ १७ ॥
॥ वाक्पाणि वदनोऽर्थांश्च तन्मूलं तस्मै रुनं रुतम् । मंथयत्संस्तुतां रुस्य मंथनाननपूरकः ॥ १८ ॥ अष्टाश्व
॥ १९ ॥ वनवस्त्रैर्मम मज्जं मम प्रजोनादिदकर्मदेहदानपि । यथाश्च रुताश्च पिबन् वदन् यथा ॥ २० ॥ सिंहा
तः सर्वं क्रिष्टास्मै रुनमात्रं यथा ॥ २१ ॥ एतन्मूर्द्धिष्ठमस्मै व श्रुयते पञ्चपन्ननः । पद्माक्षोऽपि रुतं रुतं
मंथितं रुतमादत्तात् ॥ २२ ॥ शिकारं चैव पीत्वा ह मधुला क्वांतिमात्रं यथा ॥ २३ ॥ निधीषद्दिशो गमं सारं
तीं । पाण्योऽङ्गदोषं कृत्वा रुजं देवगतामस्वीं ॥ २४ ॥ ॥ स्कन्द उवाच ॥ विपुना विजिता कुरु विपुना
सत्रं धिपति ॥ २५ ॥ तन्मा क्रीमाजने पुरु तन्मा क्रीवाशने पति । तद्विद्यां च यत्र क्वापि वगला हृदयं मनः
॥ २६ ॥ वगला मुखे पदं वाक्का वाचा मुखे पदं वदतः । एतद्वयं च उवाच स्वाही युग्मं ततः पत्रं ॥ २७ ॥

वनमथ ॥ १३ ॥ उकाक्रीववगला साधनामममदगत ॥ वितथदाथकालषु सदुपयमाप्रयात
दिमान् ॥ १४ ॥ मरुयतन्नदीवर्गं नायकायाविद्यावत् ॥ मरुतिरुस्मत्तन्मृदि निःक्रियलमायत ॥ १५ ॥
॥ १६ ॥ मृशरुत्रगतसमाक ध्यानमायुगवृद्धिमान् ॥ सर्वोत्तमदलनैक्यात् रुस्मन्नावकुमात्रक ॥
॥ १७ ॥ सिद्धाश्चसंरुयतिधुर्वच ॥ १८ ॥ वादार्थवाथेवालिष्ट सरोयीनाजसन्नि ॥ गत्वाउऊप
मासाकथनं ॥ जिह्वास्मरुनमाप्रयात् ॥ १९ ॥ ननेवसिधतग ॥ मलुलादनमानव ॥ दक्षिणमूर्तिमेक ॥ १८
द्विशागमसांख्यायननैक ॥ एकविंशतिः पटल ॥ २१ ॥ ॥ नमस्कृतवदवर्गं जिह्वास्मरुनकात्रि
क ॥ विपुत्रात्मकश्रवक ॥ वगलाकुमिदं पू ॥ सत्रासनस्युजितं ॥ अगस्त्यः पाकवान् पू ॥ नामदा
तोददयमनं ॥ ४ ॥ पथमवगलावीजं वात्रादेतदनैतरी ॥ ममगर्भतत ॥ किं वगलावीजमूद्वनत्
त ॥ ३ ॥ रुक्युर्गमनाच्चाय ॥ ॥ ॥ लितापिवयुर्गमकी ॥ वगलामुखीत्युच्चाय वगलावीजमूद्वनत् ॥

॥१॥ शिवत्वाविंशद्वर्ग्युक्तं वगलायाः सपावनं । इवामिमिथवागु कंदानुष्टुपुरुवत्सुत ॥२॥ दवता
अनदद्याश्च न्यासविद्यासमावत ॥ अमरुदं यवक्षामि मंरुदं नपुरुक ॥१०॥ वरुदुर्कं किनयन
पीतपुष्पेन लंकां ॥ विष्वाशी वानवदनां महाधूर्तितावनी । सर्वविद्याकर्षणं सर्वज्ञापयदानी
॥ नपयलद्वर्गं ॥ न अमममिथवाविष्वाहद्वर्गं मंरुदं नपुरुक गालकं वायु मंरुतं । रुतकात्रमृक
रुजयत्यश्वात्सुमदमं गतमवव ॥ यागिनी पुरुजयत्युदवधुद्विसमन्विता । मनुसिद्धिर्न सद्या नान
वृहस्पतिसेमापिवा । अपित्वा रुसदमं रुववम्यवसन्निष्ठा । वृद्धिर्न ॥ अरुतं न ॥ निसमा
र्गं ॥ माहकासन्निष्ठा मंरी अपदनासदमं । सद्यः मंरुनमाधिति बाल्मीकसदृ ॥
रुमंरुपमंरु विमदमं दिनदिन । मलुता नृणां ममृदं कृत्स्नमद ॥ अपिवा ॥ अश्वयुज
र्गं अमृर्गं अपमावत ॥ सर्वांगवायुना गृहीयं गच्छाम ॥ पार्वतीसन्निष्ठा ॥ पदयुत

॥२॥ ॥ दत्तवत्तगलानाम्नी उगद्यापकवृषिणी ॥ ग्लोवीर्द्धवर्द्धकिः ॥ रुद्रकार्त्तकीलर्द्धनथा ॥ २ ॥ मनुना
कुर्द्धीतिनयनी पीनान्ननपथाधनी ॥ जिह्वाखर्द्धपाषाणार्द्ध गद्यध्वनयनीहनी ॥ पीनीवन्नधनीधनीः
वर्द्धपयदात्रिणी ॥ रुद्रद्वामुवगली सर्वकर्षणकर्मसु ॥ उर्वध्वात्वाङ्गपमर्द्ध वासलर्द्धकमानक
मकात्रपूक ॥ लुप् हंसमृडासुवृद्धिमान् ॥ वदनीरुलमार्द्धव दत्तादनीध्वकमानका ॥ वाक्कात्त
सुध्या नान्यथा निवराषिर्द्ध ॥ मट्मट्मुञ्जयमर्द्ध निष्ठायां वल्लिकालया ॥ जिह्वास्फुरनमात्रानि
निसमापिका ॥ वीवरुडालयपूज श्रुयर्द्धयमावन्नम् ॥ सिद्धिदाजयनयूज नान्यथा निवराष
वर्द्धयमर्द्ध मयूर्द्धवकमानका वृषयोवनवान् ॥ ४ ॥ व्याधिवान् रुवनिध्वर्व ॥ जिमे
कवन्नमृडा ॥ लपिका ॥ जिह्वात्तमर्द्धनर्द्धा ध्वनपूर्वमृवृद्धिमान् ॥ वगलाध्वनताम
पदयूजमादनात् ॥ नकोपूजासमायूक न ॥ गमदकिर्द्धदिध्वरु ॥ श्रुधमावृत्तिर्द्धा श्रुवर्द्ध

कोष्ठरुदना॥ विघ्ननाडं समस्य च त्रयोदशपमा वचनम्॥ विमलसंज्ञपनं कृत्वा गीतं विप्र॥ म
ॐ तिष्ठीष्ये ध्यागमसंख्यायनं तं द्वाविंशति ४ पटल ॥ २२॥ - ॥ स्वर्गसिंहासनासीनी सन्दर्भा
नमस्तु वचनं दाय तापय दनाय वा वगला ममु मदा मंते पथागम नू वदं कन ॥ २॥ ॥ ॐ ॥
मा वचनम्॥ निर्यव विमलसंज्ञ पक्षसं विजितं दिय। वाचा सिद्धि रुव रुस्य गायान् पटल ॥ ४॥
॥ ३॥ जिह्वा संरुने माया नि साक्षाद्वा गीत्यत्रापि वा। ॥ अहं संरुने मा प्राति सद्या वधि वतं वचनम्॥ ३॥
वचनम्॥ ॥ ४॥ कदली मूलमाधित्य अयनं उपमा वचनम्॥ पद संरुने रुव रुस्य वीतं गीतं वचनम्॥ ४॥
॥ ५॥ विषतिंद्रक मूलं च समाहित्य मनुं उपमा वचनम्॥ अयनं रुव रुस्य गायान् पटल ॥ ५॥ नद्यां स
दिन सहस्रं वगला मनु पूर्वकं। गर्ह्यं वरु रुस्य नाप्या ४ विव रुस्य ॥ १२॥ वल्ली पला मूल न
वाक्यं नाको नाको उपमनं। सापि वरु रुव रुस्य नान्यथा विव रुस्य ॥ १४॥ ॥ ॐ ॥ न पञ्चप नं

॥ इति पृथग्विधमप्युक्तान्नाहमायाति ननु कार्या विधानम् ॥ यथागमं तत्र संस्कारं पूजाकालसमावयत् ॥
 सीमा सुन्दरी गी सुविस्मिता ॥ विधास्य विधानवदनं आयसी नयथाधरी ॥ १॥ ॥ कुमार उवाच ॥
 ॥ ॥ कुमार उवाच ॥ त्रिकालं तु समासीना ध्यानं पूर्वकं सोधकः ॥ त्रिसकर्मं पुनित्वा तु ऊर्ध्वं पश्चात्स
 हस्तं त्रिली ॥ ४॥ तत्तु रुद्राद्याभिनाहं तु रुद्रदवनसं गयश विहीतकतत्रा मूलं अयुतं ऊपमावयत्
 ततः उक्तं ॥ ३॥ पितृसद्वत्तत्रा मूलं अयुतं ऊपमावयत् ॥ घ्राणसं रुद्रमा प्राति प्राणीपिनवत्सनाह
 वन्नन ॥ ८॥ कर्तुं मूलमापि ह्य अयुतं ऊपमावयत् ॥ संरुथ ऊ ० नागिस्तु अन्नदसं रुद्रं धूर्त
 ॥ १०॥ नद्यां समुद्रगमिनीं नारिदधुजलननशतर्पयद्वाली मुलं एकं कृत्वा मलमथ ॥ ११॥ दिन
 यलागमूलन ऊपदयुतसं रयया ॥ मं रुमाधपिथारुया ॥ एकं कृत्वा कुमारके ॥ १३॥ तर्पणं तु दि
 नपऊपमं रं एकं कृत्वा उपूर्ववत् ॥ सद्यस्करुयाया नाग रुद्रदवनसं गय ॥ १५॥ पूज्यागमनऊप

दव मयूतं ध्यानपूर्वकं । लक्ष्मीनामयतनं सप्तशतवर्णितम् ॥ १३ ॥ ऊर्ध्वं तत्र मूलं च मयूतं रूपम्
 दक्षमवधाय त्रिपुल्लं चैव दातव्यं । जिह्वासं रुनमाप्नुयात् ॥ १४ ॥ द्विषातं मंजिरीं चैव । नात्रिकलरुलादव
 द्भूषणं च । सहस्रं मंजिरीं पूज्य दातव्यं गणनाशनं ॥ १५ ॥ तीव्रं लवणं चैव । जिह्वासं रुनमाप्नुयात्
 तच्च दनं लपनं च । त्रिपुल्लं चैव विप्रसिद्धम् ॥ १६ ॥ दंतध्वावनकां चैव । मंजिरीं चैव सहस्रं । कल्पावनं त्रिपुल्लं
 ध्यात्वा । त्रिपुल्लं चैव नमस्कृत्य ॥ १७ ॥ पञ्चदशं चैव । गणनाशनं चैव । मंजिरीं चैव । त्रिपुल्लं चैव ।
 सध्या मूकं चैव । मंजिरीं चैव । त्रिपुल्लं चैव । गणनाशनं चैव । मंजिरीं चैव । त्रिपुल्लं चैव ।
 ॥ १८ ॥ ॥ कुमार उवाच ॥ नमस्कृत्य पञ्चदशं । नमस्कृत्य पञ्चदशं । नमस्कृत्य पञ्चदशं ।
 पञ्चदशं चैव । गणनाशनं चैव । मंजिरीं चैव । त्रिपुल्लं चैव । गणनाशनं चैव । मंजिरीं चैव । त्रिपुल्लं चैव ।
 ऊर्ध्वं दातव्यं । लक्ष्मीनामयतनं । सप्तशतवर्णितम् ॥ १९ ॥ वल्गुं चैव । पञ्चदशं चैव । गणनाशनं चैव । मंजिरीं चैव । त्रिपुल्लं चैव ।

६ अयुर्नरुपमावतत्। उमाकलंकलंसर्वं मधुलान्नागमाप्रयात् ॥ १० ॥ गतवानमंतिर्नवार्कत्रा
नेकलहलादक ॥ पाययदादित्रिभूरि ॥ जिह्वा संरुनमाप्रयात् ॥ १२ ॥ नागवल्लीदलंवेव कमर्क
रुनमाप्रयात्। वंदनंवेव कस्तूरी धर्षितंमंथयत् ॥ २१ ॥ पुनश्चमंथयत् पाठगुणमहयुक्तं ॥
ताश्चनत्रिपाल उदग्ध्रावनमावत ॥ २३ ॥ जिह्वावालीं चवृद्धिं च पिपासादिकं तथा। संरुनं च रुवत्स
नेदाको विमहसंरुपयत् ॥ २५ ॥ गमरापापतिव क्रान्तिरपि ॥ स्वयं ॥ जिह्वा संरुनमाप्रति
॥ २३ ॥ ॥ श्रीवापीर्मावनवापनूलाकसुमर्गं धुल्यं। सुविनितवसनीं श्रीं त्रिकोनीं रुद्रामि
लं ॥ रत्नालेका ॥ २५ ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवा ॥ रागववापनवसंगुच्छ आवापमूर्च्छां निष्ठां तथा। मां सूर्च्छां स
तां ॥ हलुमधुनि ॥ क्रियत् ॥ ५ ॥ सविषं सऊर्त्तयुक्तं कथाम्बलनमवच। हविर्दीप्तनि ॥ क्रियत्
कथाम्बलनमवच ॥ ३ ॥ अथ त्रिधनेन च कालीं कथाम्बुवृद्धिमान्। तस्यामृदुवलावत् प

[illegible]

कथं हन्दिमालिमादनाम् ॥८॥ ननकृयात्मिकां च श्रुत्वा कृतवर्ततथा । प्रयत्नीनिर्मितं स्रुतं नत
 साहसि नृपत्रात्रतथा ॥९॥ निवदयत्यायसं च शकनाश्च समन्वितं । सहस्रं पञ्चपञ्चको पञ्चाष्ट
 लेका सिद्धिमाप्नुयात् ॥१०॥ उर्वचमालिकां कृयात् मंगसिद्धिमथ कृत्वा ॥ हन्दिमावमुमाकाशसि
 द्धौ गरीशो समावृत्तः ॥११॥ दवीरुत्वा जपद्वी मर्वयद्विधिवद्यथा । प्रमादो मालिकाहमो पति
 मालिका लक्ष्मीतथा ॥१२॥ पञ्चविंशतिरिभक्ति स्वास्ति साकृत्तथा । वलीकृतसंमार्ग कलासंख्या २०
 वृत्ताद्वार्कसंख्याया ॥१३॥ कृतभागद्विपी जपं पञ्चवचनं दुर्दश । पञ्चाष्टानुसंगिक मारिष्य वृद्धि
 यो नानानि पूजक ॥१४॥ हन्दिमापंकर्तृक कस्तूरी चैव कर्पूरी । धीरवृत्तं गुणवृत्तं दत्तात्रयं नवद्वि
 वचनं गुलमानतः ॥१५॥ सर्वांगसन्दरीद्वी द्विज्जावगता मूर्त्ति । वगला चैव विभ्रती पीनान्न
 विधिनारुका ॥१६॥ श्रुत्वा कृतं कृतं नवद्विजा कृतं मवचं । कृत्वा एका कृतं मवचं कृतं मूर्त्तिनिःकृपित ॥१७॥

[illegible]

[illegible]

नृ॥ नवकथासुत्रार्थार्थद्वीपलक्ष्मणमाश्रयात् ॥ १३ ॥ त्रयोदशमवकलेशी दिवावकलेशी ॥ हविर्दाम
काले सवसिद्धिकर्तृनृणां ॥ १४ ॥ मधुकपूरसंमिश्र मयितनजलनवा ॥ तर्पणं तद्वर्णं ॥ न दत्तमाम
बाष्पलान् रुजयत् ॥ १५ ॥ आगिनीपूजयत् ॥ तद्वत् ॥ द्विपमन्त्रिणी ॥ मनुसिद्धिर्लक्ष्मण नाशका
कनू सदाशोटीनवाटीनथ ॥ स्नानार्थं जनरूपेण ॥ संहितां सवदनेर्लपितां पूजां ॥ त्रमपाकथेदहसि
॥ १६ ॥ पनैकनू सवदा ॥ १७ ॥ यगयनसंयुक्तं लोकिकार्चनमववा ॥ वहुनंगुलसंयुक्तं पुष्पपूजाकृमा
कार्चनमववा ॥ १८ ॥ आषिक्कुक्षिद्वयपूजा पंचमापनमादनात् ॥ नतसोलायपूजाय मृनिगुर्धपूजाय
धि ॥ १९ ॥ वज्रदं विधिवत्पूज नदयं यस्य कस्यचित् ॥ सृष्टिस्तिर्निवर्तनं जीवन्मुक्तिपदं तथ ॥ २० ॥
॥ २१ ॥ संहर्षकामनूय कनूपांचलथापनी ॥ पी ॥ ॥ पत्रिसमावध्य गरुकोलागमश्च कृमात् ॥ २२ ॥
गयनीकस्य कन्याया क्लिप्ता कममादनात् ॥ कवल्लुक्लिप्ता ॥ सवसिद्धिकनू ॥ २३ ॥ कोलसात्रं व

हाउम। हविडासुसंपूकं त्रिडावर्णवर्दनं ॥ ११ ॥ हविडयाक्रमालां च हविडावर्णवर्तनीं ॥ स्मप्रवृत्तप
 मी। हान दवतामृद्धिनिःक्रियत ॥ १२ ॥ आश्विनमिष्टिर्नैव हवित्रापायसंक्रमत ॥ पूष्णकृतीततादयाः
 वरुण नाशकाया विवात्र ॥ १३ ॥ आदोरुस्वत्र नृपिणी कनू सदा सद्धं सजां या गिनी नानालकलसंयुता
 म्पाकथदहसिमा हथेष्टुद्यावह ॥ लोकि के च वगुफा ह सोराग्यवकिमात्रक ॥ मनुसिद्धि कर्तव्य
 गुफपूजाक्रमान्नक ॥ १४ ॥ सोराग्यवविभिष्टेव पंवी। मपाहर्नहुवि। याषितुर्दकिडयपूकं लोकि
 मनिगुर्धं पूजातनं ॥ १५ ॥ विन्दपाहपूतपूजा निगुर्धं यागिणीमर्त। नतत्रुविभपूजा दहनामावनावि
 केपदं तथ ॥ १६ ॥ नतदवविभिनाम संकतम निरिःसर ॥ सृष्टिगोउद। गयु क्तिनिःकनलदहकः
 कमात ॥ १७ ॥ श्रुवनागोउद। गयं सृष्टिपूजाकमस्वयं। पूर्वकिलक। लपतं मृदपय्यककतथ ॥ १८ ॥
 १॥ कोलसात्रवर्तनाम सर्वमंशारुमारुमं। पूर्वकिलक। लपत कत्वाखंजनमादनात ॥ १९ ॥ विंदमाह

[illegible]

[illegible]

22

[illegible]

विनं कलनपर्व ॥ २३ ॥ अयुतालस्य गणेश रुचनमनमूलमं । मयस्य पृष्ठकन मिथिनं कलनार्था
 लिखत ॥ २४ ॥ अयुता विनितं कार्यं रुचनमनमं गणेश । नतलपर्व गार्ग्य सिद्धा सिद्धनं सत ॥ २५ ॥
 द्विगंति ४ पटल ॥ २६ ॥ ॥ नाना लंका ना । मरुता न नाना यलपि यी । वंददं वगली दत्री प
 वददा मयथा गव वगला वदुन क्रमे ॥ २७ ॥ ॥ ॐ ध्वज उवाच ॥ वक्रहा मविप्रिंसमं कृ सावधन
 प्रमृधुर् । कनवीनस्य अयुतं रुचनं वाच सयुतं ॥ २८ ॥ रुचनं विना कलकालुह अयुतादियुना न । वि
 ताहा नीरुमयुतं तिलते लनसंयुतं ॥ २९ ॥ रुद्रया सर्वसर्व सिद्धार्थं हाहा कानं वक्रुर्क ॥ ननु मय
 माहि ॥ कल्पा कलुकिना लकी ॥ ३० ॥ नरुलन रुचनं दाहा वयुतं वाच मिथिनं । हाहा पति सभा विद्वी न
 ॥ ३१ ॥ अयुतं वाच मिथिनं ॥ ३२ ॥ रुद्रक वलसंयुता विग्रह पमहा न ॥ ३३ ॥ रुद्रमय मूलं वदुका
 मे रुद्रा रुद्र किं लभ्यते ॥ ३४ ॥ गमं वानगनं वाच वलं ना कलुह वा । नाडी वल सभायुका नाना दृश्य

[illegible]

कृमा ॥ १४ ॥ रुक्मा रुक्मा कानं कुरुं कुरुं विवर्तु ॥ तत्तुलं निवर्तु तन मिथितं निवर्तु
 लम्बक ॥ १५ ॥ पया यान्म यतः ॥ नाशकाया विवर्तु ॥ समर्पे तवर्तु ॥ तिल तेल तन मिथितं ॥ १६ ॥
 १८ ॥ रुक्मच पूर्ववत् ॥ अयतं यत पावक ॥ कुरुमागी रुवत् ॥ सिधत तन निधय ॥ १९ ॥ समी मूल
 २० ॥ तत्तुलं ॥ २० ॥ वातमागी रुवत् ॥ सिधत तन निधय ॥ अयामागि वीजं रु तिल तेल तन मिथि
 २२ ॥ वैष्णु मिथारुवत् ॥ सद्य भवति विदितं ॥ समी मूल समाधिय स्यात्तादं स समा सतः
 २४ ॥ वैत्रिमीलं रुवत् ॥ धवडकं निर्गर्तं ॥ तिल तेल तन समी मिथं ॥ तादं स मली रुवत् ॥ २५ ॥
 ३ ॥ ॥ तिष्ठथाग सत्यं नाशकाया विवर्तु ॥ ॥ तिष्ठी स विद्यागम स्यायन नैव सत्य विवर्तु
 रुक्मा रुक्म वृषिणी ॥ १ ॥ ॥ काश्च रुक्म दवाव ॥ विवर्तु नाथ नमस्तु विवर्तु पाक नमानम ॥ सगमं सैरु
 ५ ॥ रुक्म रुक्म वलमाशु ॥ मरु सिद्धि मवा प्रयाग ॥ ३ ॥ नक्षत्रं नवदामं व नक्षत्रं नवतर्पणी ॥ स रुक्म रुक्म

ब्रह्मर्षिः त्रिंतिर्नरुवति धूर्व ॥४॥ नवाहिषर्कं नवमं रुदीशानवा मिदिक्कालकडुध्रदवता ॥ नवापिपंथवि
रुं । सहस्रमत्रलमात्रुल वांकिनरुलमाप्रयाग ॥५॥ संचानवानदत्रिडापि सुव्वारुवतिपल्लित ॥६॥ वहु
वज्रग ॥ नवदिनाकलोपुग सुव्वर्ककीर्तिकानर्ही ॥७॥ गुह्यध्वरुर्नर्पसी नम्यनाशनकात्रही । वगलाष्ट
गलाष्टदयंमंग सुपाशनपत्रम्यत्रा ॥८॥ कत्रातियस्यसंताप्य नम्यसिद्धिरुवधूर्व । यनर्कनापुपाय
महुर्ली मत्वमत्वविश्वगत ॥९॥ वज्रदंतवसर्वग कोव्वरुदननरुल ॥१०॥ पाणवीर्कसमव्वार्य सुव्व
कामनाशनरुल ॥११॥ धीवीर्कवुवनगीव वगलामुखिपदंवदन् ॥ आवर्णवदयंयनरु पाणवीर्क
महाधार्मतात्रनरु ॥१२॥ द्रुदयनिसमव्वार्य आवारुययुगीवदन् । सोनिध्वं कूत्रयुग्मंय पनवीर्क
स्वारुसमन्विन ॥१३॥ अशीतिवर्गसंयुक्ता वगलाष्टदयंमन ॥१४॥ वंक्षामन्माशय जाह्नदयनवा ॥
॥१५॥ पयःपिवतिवात्सल्यं वंक्षायुगवतीरुवन् । कृषिमसुत्रभागसु नानारुयसमरुव ॥१६॥ जि

॥ नथापि पंचद्वियनिग्रहं च सकृदुक्तं यथा गच्छन्मनः ॥ १॥ वगला हृदयमर्पय वक्त्रादीनां सुदृष्टं
तपस्विनः ॥ २॥ वदन्नामस्वनाद्येव कीर्तिमान् नैदिकारुचः ॥ ३॥ मानिलश्चापि कामसु नेष्टिका उष्ट्रं
पानर्ही ॥ वगला हृदयमर्पय सकृदावर्तय रुचः ॥ ४॥ तस्मात्संयतमात्रं नष्टस्यास्य उपाधिना ॥ व
नकनाप्युपाय न हर्षं कथय न उपायत ॥ ५॥ सीतापञ्चनय रुचो विनिर्गच्छ लमा प्रयात ॥ तन्मंथाद्वान
मृचाप्य सुव्रमायी गता च न ॥ ६॥ श्रीकृष्णं वीजमृचाप्य रुचना हं गता च न ॥ वाना हं वा रुचं व
मेतु ॥ गता वीजं गता च न ॥ ७॥ सुव्रमायी गता च न ॥ श्रीकृष्णं वीजमृचाप्य रुचं व
व पुनर्वीजं रुचं वद ॥ ८॥ समेव हृदयस्य क्ता विनिर्गच्छ हृदयं वद ॥ पुनर्वीजं रुचं वद ॥ दृष्ट
ता हृदयं न च ॥ ९॥ वक्ष्ये पुरुषं वीजं वद ॥ वगला हृदयमेव हि सफ मरिचं यत्
॥ १०॥ हि सफ मरिचं गतायं सद्यो नैर्मल्यमा गता ॥ नित्यमष्टा रुचं गता ॥ वगला हृदयं मर्पय ॥ विनि

मंत्रवत्पुत्र नाशकार्या विनाशकम् ॥ ॥ तिथीष्वदिशागमसंख्यायनतं वृक्ष विंशतिः पटल ॥ २८ ॥
॥ ११ ॥ ॥ कोऽरुदडवाच ॥ अष्टमूर्त्तनममूर्त्तं आनंदगुणमागमः ॥ वगलाहृदयं मंजुस्य पथागीत
वेवटुलं च रूपनद्वयसंपूर्णं ॥ ३ ॥ माधुलिश्वरमहामंजु वगलाहृदयं तथा ॥ त्रिका ॥ लघुलिश्वरीजं
मंजु माधुल्लिखितकमात् ॥ ४ ॥ तस्यापत्रिचसंवक्ष्य वगलावीजमादयात् ॥ तस्यापत्रिचसदृको
नं स्वर्णवागोपायवतो ॥ ५ ॥ लिखित्वागुरुलाग्नदुः श्रुल्लिखित्वागुरुलाग्नदुः श्रुल्लिखित्वागुरुलाग्नदुः
वनादिरि ॥ ६ ॥ कोलावनाविधानेन मंजुसिद्धिरुत्तमं ॥ सनके ॥ पूजयिष्ये रूपात्रिपुसव ॥ ७ ॥
॥ ११ ॥ वगलाहृदयवक्त्रवयं हृदय ॥ नथ ॥ स मंजुसंमलो वक्त्रवयं हृदयमादयात् ॥ १२ ॥ वगलाहृ
॥ पूजयिष्ये रूपात्रिपुसव ॥ १३ ॥ वगलाहृदयवक्त्रवयं हृदय ॥ नथ ॥ स मंजुसंमलो वक्त्रवयं हृदयमादयात् ॥ १४ ॥ वगलाहृ
प्राति पूजायाश्च परावतः ॥ पंचकनेवसंपूज्य पूर्ववद्विजितं हि यः ॥ १५ ॥ तस्य दर्शनमात्रेण वादिन

तत्तद्वपुःका आत्मकपुष्पः संयुज्य पर्ववद्विजितद्विजय ॥ १२ ॥ लस्यतः प्रसन्नार्थं च अनायासं साधवः
यथोपवीतं कर्तुं निपुण्यं निर्गन्धं नम्रं विना ॥ १३ ॥ अथ यत्तमं कीर्त्तयामास केशवः सिद्धि
तद्गालामं नृ मुनिपुत्रं सत्पावनं ॥ १४ ॥ पक्षाद्यत्नकस्यापि दवताः पमायुयात् ॥ ॥ इति श्री
उपोष्यवद्विनी । स्मृत्यर्थं रुद्रं स्वी पीतमाल्या नलपना ॥ १५ ॥ ॥ को रुद्र उवाच ॥ नमस्तु सर्वस्य
व ॥ वदादिविलिखत्यूर्ध्वं पादवीर्यमनेतरी । सुव्रतमायां तताश्चार्थं श्रीकृष्णवीर्यमवच ॥ १६ ॥ द्रुतं वा
मावगलानाम्नी विनयी विश्ववृषिणी ॥ उर्वीरं ह्रीं ह्रीं किं च को कीलकमदाहृतं ॥ १७ ॥ न्यासविद्यां नवगल
पीतावनध्वनीं विवां । विरूषलं च रुषीं समपीनपथाध्वनीं ॥ १८ ॥ मदिनाभादवदनं पवातं रुद्रं वन
त्रीमनं ॥ आननेव उपैकस्यात् आयदाशं तात्पर्यं ॥ १९ ॥ अष्टकमूलनिवस नम्रव्रतन
॥ तद्गालामं नृ मुनिपुत्रं सत्पावनं ॥ २० ॥ यागिनीपूजयत्यष्ट गङ्गाकोलागमकमा

नायासनसाधकः। कतकीकसमोलेव पूर्ववत्प्रयत्नः॥२०॥ निधननीलकण्ठस्य शिवस्य वचनं
के॥ वाक्ये सिद्धिर्भवतु स्य दवीनृपानसंगाय॥२१॥ तस्य दर्शनमात्रेण सर्वसिद्धिः सवाप्नुयात्। यद
॥॥॥ तिष्ठीषद्विद्यागमसंग्रहायनतं यत्र कानि विंशतिः पटलः॥२२॥ ॥ नमस्तु ददतु हि प्र
॥ नमस्तु सर्वसर्वज्ञे पुनानपुनराकृतमः। वागलाष्टकं श्रीमदं वदमस्तु त्वत्कन॥२॥ ॥॥॥ नमस्तु
॥॥॥ ददतु वागलाष्टकं स मायुके मंगलमस्तु कर्तुं तथा। वक्राभिसिद्धिर्ददाम्य गायत्रीसमदाहृतं॥४॥ दद
मास विद्यां वागला मनुनाकुवदाचनतः। ध्यानं च वचनं चामि मंगलदत्तपूजक॥५॥ पूर्वार्त्तं वदतु दद
वागलाष्टकं पुनः। ध्यानपठनं च ह्युद्दिष्टं विदुर्वागलांस्तु॥६॥ नवध्यानात्पत्युः वागलाष्टक
वनं॥७॥ त्रिदालालेकादिः। वल्लिर्नृपयन्मनः॥१०॥ अष्टायुतं तपसां च ददमीमिषवा नि
तमाः। वागलाष्टकं प्रयत्नः॥११॥ नतर्नृपयन्मनः। शिवाज्ञानातिनाना॥

वित्त्वमूलकपन्मानं मयूतं ध्यानपूर्वकी ॥ १३ ॥ लक्ष्मीवान् जायते पूरु दन्निदमुनसं हाय ४१ कृत्वा
 समीमूलकपन्मानं मयूतं पूर्ववन्नन ॥ १४ ॥ अष्टनाश्र्यं लक्ष्म्यं अनायासनानिधिर्देवो
 उदैव न तत्राभूत् पूर्ववक्ता पमावतः ॥ १५ ॥ कथनसदृशं ह्रीमान् जायते नाहं सहाय कदा
 भूतः ॥ य ८८८ दं १०२ ॥ ॥ निधीषद्दिशागमसांख्यायनैश्च विहीतिराम

॥ॐ निशीषद्विद्यागमसांख्यायनर्तु विहा निरुप

२४१ अथ दशमोऽध्यायः ॥ दशमोऽध्यायः ॥ १४ ॥ अथ दशमोऽध्यायः ॥ १४ ॥
 निमित्तं ॥ दशमोऽध्यायः ॥ १४ ॥ अथ दशमोऽध्यायः ॥ १४ ॥
 ॥ १४ ॥ अथ दशमोऽध्यायः ॥ १४ ॥ अथ दशमोऽध्यायः ॥ १४ ॥
 ॥ १४ ॥ अथ दशमोऽध्यायः ॥ १४ ॥ अथ दशमोऽध्यायः ॥ १४ ॥